२१वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध

चुनौतियाँ एवं विकल्प

पर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

१४-१५ फवरी, २०१५

आमंत्रण

: आयोजक :

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

तथा

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

0551-6827552, 2105416, 09794299451

email-mpmpg5@gmail.com, web : mpm.edu.in

२१वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ एवं विकल्प

नेपाल भारत का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से निकटतम अभिन्न पड़ोसी राष्ट्र है। प्राचीन काल से इन दोनों देशों की शिराओं में सप्राणता का एक ही रक्त-प्रवाह बहता रहा है। एक ही सांस्कृतिक और आदर्श दोनों के जीवन की प्रगति मार्ग को दिशा देते रहे हैं। इसकी प्रामाणिकता के लिए एक ही तथ्य पर्याप्त है कि नेपाल के किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में 'संकल्प' का मंत्र वही है जो भारत में प्रचलित है। नेपाल के पुरोहित निःसंकोच 'संकल्प-मंत्र' में अपने देश के लिए 'भारत खण्डे' का प्रयोग करते हैं।

भारत-नेपाल अनादिकाल से ही सांस्कृतिक एवं भूगोल की धाराओं के अटूट साझीदार रहे हैं। हिमालय इन दोनों के लिए आत्म साधना का स्थान रहा है। हिमालय से वे नदियाँ निकलती हैं, जिनसे दोनों देशों की भूमि शस्य-श्यामला बनती है अर्थात् जितनी आवश्यकता प्रगति एवं विकास के लिए नेपाल को भारत की रही है, उतनी ही आवश्यकता सीमा सुरक्षा की दृष्टि से भारत को नेपाल की है।

भारत व नेपाल के सम्बन्ध प्रायः सौहार्द्र पूर्ण रहे हैं तथा इसे बनाये रखने के लिए दोनों देशों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण सन्धियाँ की गयी, साथ ही साथ दोनों देशों के राजनयिकों द्वारा समय-समय पर यात्राएँ की जाती रही हैं। भारत-नेपाल के प्रगति एवं विकास कार्यों में योजनाबद्ध रूप से आर्थिक सहयोग करता है। कतिपय राजनीतिक कारणों से नेपाल, भारत के प्रति संशकित रहता है। भारत में नेपाल के स्वभाव को लेकर भावनात्मक और राजनीतिक चिन्ता दृष्टिगत होती है। यह विडम्बना ही है कि भारत-नेपाल सम्बन्धों में भारत की ओर से नेपाल के लोगों की कुशलता और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायित्व का भाव दृष्टिगत रहता है जबकि नेपाल में राजनीतिक, रूपान्तरण के प्रत्येक अगले पड़ाव के साथ संशय और दुराव की स्थितियाँ सृजित होती है।

वर्तमान में नेपाल एक उभरता हुआ लोकतंत्र है। संविधान सभा के निर्वाचन के साथ ही नेपाल ने शांति एवं लोकतंत्र की राह पर अपने कदम मजबूती से आगे बढ़ाये हैं। इसने राजतंत्र को समाप्त कर देश को संघीय गणराज्य घोषित किया गया है। १९९० का संविधान जो २००७ के मध्य तक लागू रहा, लोकतंत्र में समानता की बात करता था, लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं था। यही कारण रहा कि नेपाल दस वर्षों से अधिक समय तक आन्तरिक अशांति से जूझता रहा। नेपाल विश्व के सर्वाधिक गरीब देशों में (मानव विकास सूचकांक के अनुसार), १५७वें स्थान पर हैं। रोजगार की तलाश में भारत की ओर पलायन करने वाले व्यक्तियों की संख्या लाखों में है। प्रतिदिन लगभग २०० नेपाली युवक बतौर मजदूर खाड़ी देशों में पलायन कर रहे हैं। नेपाल में पर्यटन उद्योग वहाँ की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो भारी मन्दी की चपेट में है। देश में हड़ताल व बन्द के साथ ही जातीय समूहों के बीच मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो गयी है, जो चिन्ताजनक है। नेपाल संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना व राजतंत्र की समाप्ति के इतने समय बाद भी राजनैतिक स्थायित्व से वंचित है। राजनीतिक अस्थिरता का सीध

॥ प्रभाव संविधान के निर्माण एवं नेपाल की प्रगति व विकास की योजनाओं पर पड़ रहा है। अभी जो राजनीतिक वातावरण है, उसका असर सरकार के संवैधानिक अंगों, नेपाली सेना, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और शांति प्रक्रिया की कड़ी में स्थापित व्यापक शांति समझौते पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। अभी जो संक्रमणकालीन स्थिति है उसमें एक के बाद एक औद्योगिक प्रतिष्ठान बन्द होते जा रहे हैं। राजनीतिक सहमति के अभाव में सरकार पूर्ण रूप से बजट नहीं ला पा रही है। संवैधानिक अंगों के प्रमुख पदों पर जो खाली स्थान है, उन पर नियुक्तियाँ नहीं हो पा रही हैं। निश्चित रूप से बदलते राजनीतिक परिदृश्य का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव भारत-नेपाल सम्बन्धों पर भी पड़ता है। वैश्विक स्तर पर आये परिवर्तन तथा भारत की पड़ोसी देशों के प्रति अपनी नीतियों के कारण दोनों देशों के बीच मधुर सम्बन्धों की व्यापक सम्भावना है। शेष भविष्य के घटनाचक्र पर निर्भर करता है। लेकिन कुछ ऐसे बिन्दु है, जो भारत नेपाल सम्बन्धों में समय-समय पर तनाव उत्पन्न करते रहे हैं।

इन प्रश्नों और मुद्दों पर व्यापक विमर्श और समाधान के विकल्पों तक पहुँचने के लिए इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है, जिसमें प्रमुख विचार बिन्दु निम्नवत होंगे-

१. भारत-नेपाल सम्बन्ध : सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक यात्रा।
२. भारत-नेपाल सम्बन्धों के निर्धारक कारक।
३. नेपाली-अर्थव्यवस्था में भारत की भूमिका।
४. नेपाल की आन्तरिक स्थिरता और राजशाही।
५. नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था की भूमिका।
६. भारत-नेपाल सम्बन्धों पर चीन का प्रभाव।
७. नेपाली अर्थव्यवस्था में चीन की भूमिका।
८. नेपाल में आन्तरिक अशांति के कारक।
९. माओवादी आन्दोलन का नेपाल के राजनैतिक एवं सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव।
१०. भारत व नेपाल के माओवादियों का अन्तरसम्बन्ध।
११. नेपाल सेना : चुनौतियाँ और सन्नद्धताएं।
१२. नेपाल की वर्तमान चुनौतियाँ और भारत के लिए नीतिगत विकल्प।
१३. नेपाल चीन सम्बन्ध और भारत।
१४. भारत की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा और नेपाल।
१५. नेपाल से अवैध आव्रजन की समस्या और भारतीय सुरक्षा।

शोधपत्र - संगोष्ठी में प्रस्तुति हेतु शोध प्रपत्र में विषय वस्तु का उददेश्य, प्रयुक्त प्रणाली एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। संगोष्ठी के सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों पर मौलिक एवं अप्रकाशित शोध पत्र ही स्वीकृत किये जायेंगे। इसके लिए विभिन्न विषयों के शोधार्थियों एवं विद्वानों के शोध-पत्र आमंत्रित हैं। संकल्पनात्मक, सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक शोध प्रपत्र अपेक्षित है।

सन्दर्भ निम्नवत दें-

पुस्तक के लिए - लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या।

शोध-पत्रिका के लिए - लेख का नाम, शोध शीर्षक, शोध पत्रिका का नाम, भाग, अंक, प्रकाशक, प्रकाश वर्ष, पृष्ठ संख्या।

पूर्ण शोधपत्र अधिकतम १५ नवम्बर २०१४ तक संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी के पास अवश्य पहुँच जाने चाहिए। हिन्दी, संस्कृत तथा नेपाली भाषा के लिए Kurti dev 010 तथा अंग्रेजी के लिए Time New Roman के फान्ट पर टंकण कार्य होना चाहिए। पूर्ण तैयार शोधपत्र को mpmpg5@gmail.com पर ईमेल कर संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी को फोन करके सूचित अवश्य कर दें। किसी भी अन्य प्रकार की सूचना के लिए संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी तथा महाविद्यालय की वेबसाइट एवं ईमेल के माध्यम से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

भाषा - शोध प्रपत्र संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी/नेपाली भाषा में स्वीकृत होंगे।

पंजीयन - पंजीयन शुल्क शोधार्थियों के लिए ५०० रू. है। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में ''प्राचार्य महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के नाम से गोरखपुर में देय अनुमन्य होगा।

यात्रा व्यय - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार प्रतिनिधियों को वास्तविक यात्रा व्यय देय होगा। यात्रा व्यय उन्हीं प्रतिनिधियों को प्राप्त होगा जो निर्धारित तिथि से पूर्ण अपना पंजीकरण करा चुके होंगे एवं आयोजन समिति की संस्तुति प्राप्त हो चुकी होगी।

आवास/भोजन व्यवस्था - आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। यदि कोई प्रतिनिधि किसी होटल अथवा विशेष व्यवस्था चाहता है तो उसे पूर्व में सूचित करना होगा।

गोरखपुर - गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित गुरू श्री गोरक्षनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित है। भगवान बुद्ध के गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थ नगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग ६० किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशीनगर ५० किमी की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन संत एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के पोषक संत कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से २० किमी० दूर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग १०० किमी० है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डू, गोरखपुर से ४०० किमी. की दूरी पर स्थित है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक किया जा सकता है। नगर क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल है, जिनमें गोरखनाथ मन्दिर, गीतावाटिका, गीताप्रेस, विष्णु मन्दिर, गोलघर मार्केट आदि प्रमुख हैं। फरवरी माह में गोरखपुर का मौसम प्रायः सुहावना एवं सामान्य रहता है, लेकिन रात्रि में हल्की ठण्ड रहती है। अतः गर्म कपड़े अपने साथ अवश्य रखें।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

परम पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

गोरक्षपीठाधीश्वर

संरक्षक

योगी आदित्यनाथ जी महाराज

महाविद्यालय प्रबन्धक, सदर सांसद, गोरखपुर

संयोजक

डॉ. प्रदीप राव

प्राचार्य

सह संयोजक

डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह

प्रवक्ता

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मोबाइल-९४५०२८८५९२

ईमेल-drsss1982@gmail.com

संगोष्ठी सचिव

डॉ.शशिकान्त सिंह

प्रवक्ता

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मोबाइल-९४५२६९०१५७

ईमेल-sksgkp11@gmail.com

आयोजन स्थल : महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर